विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 20 | अंक: 74 | अप्रैल - जून, 2026

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा काव्य गीत एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन

29 जून, 2026 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में विश्व संगीत दिवस के उपलक्ष्य में काव्य गीत एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी काव्य गीतों की प्रस्तुति के साथ विद्वानों द्वारा कविताओं की समीक्षा की गई। इस कार्यक्रम में मॉरीशस के मूर्धन्य हिंदी साहित्यकारों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, विभिन्न हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, कलाकारों, हिंदी प्रेमियों ने सहभागिता की।

पृ. 4-5

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा 'हिंदी में मंच-संचालन कौशल' विषय पर कार्यशाला

25 अप्रैल तथा 2 मई, 2026 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रहमण्यम् भारती सभागार में हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वावधान में 'हिंदी में मंच-संचालन कौशल' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मंच-संचालन की कला, श्रोताओं से प्रभावी संवाद, स्वर-संयोजन, शारीरिक हाव-भाव, प्रोटोकॉल के अनुसार कार्यक्रम संचालन, स्क्रिप्ट-लेखन तथा मंच पर उत्पन्न होने वाली आकस्मिक परिस्थितियों के सफल प्रबंधन जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

पृ.4

भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) में तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड'

पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भोपाल में 8 मई, 2026 से तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड' का शुभारंभ हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम में पत्रकारिता, भारतीय चिंतन, संस्कृति और मीडिया के बदलते स्वरूप पर चर्चा हुई।

पृ.5

'हिंदी सेवा सम्मान समारोह'

1 जून, 2026 को मुंबई में हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष (1826-2026) के उपलक्ष्य में मुम्बई हिंदी पत्रकार संघ द्वारा 'हिंदी सेवा सम्मान समारोह' का भव्य रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री माननीय देवेंद्र फडणवीस के हाथों हिंदी पत्रकारिता में योगदान देने वाले वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

पृ. 14

श्रद्धांजलि

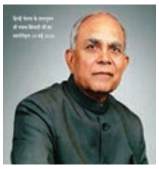

10 मई, 2026 को हिंदी प्रचारिणी सभा, कनाडा की अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' के संरक्षक एवं मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी का निधन हो गया। **श्री श्याम त्रिपाठी** अथक परिश्रम और लगन के साथ 'हिंदी चेतना' के माध्यम से जीवन पर्यंत हिंदी की सेवा करते रहे।

29 मार्च, 2026 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली के हिंदी विभाग की सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर और शिक्षाविद् **प्रो. माजिदा असद** का न्यू जर्सी, अमेरिका में देहांत हुआ। शिक्षण के क्षेत्र में उनका योगदान स्मरणीय रहा है।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *संगोष्ठी, कार्यशाला, कार्यक्रम, विमर्श, महोत्सव, समारोह, बैठक, रचना-पाठ, साहित्य-संवाद, मंचन, प्रतियोगिता* — पृ. 2-11
- *साक्षात्कर* — पृ.11-12
- *लोकार्पण* — पृ. 12-13
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — पृ. 13-15
- *श्रद्धांजलि* — पृ. 15
- *संपादकीय* — पृ. 16

ISSN 1694-2485

संगोष्ठी, कार्यशाला, कार्यक्रम, विमर्श, महोत्सव, समारोह, बैठक, रचना-पाठ, साहित्य-संवाद, मंचन, प्रतियोगिता

'गिरमिटिया देशों में रामायण की परम्परा' विषय पर संगोष्ठी

3 मई, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, मॉरीशस तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में 'गिरमिटिया देशों में रामायण की परम्परा' विषय पर संगोष्ठी (आभासी कार्यक्रम) का आयोजन किया। कार्यक्रम में स्वागत-संबोधन सुश्री श्रुति पाठक, द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस ने दिया। वक्ता के रूप में डॉ. लोकेश रामनाथ महाराज, वरिष्ठ व्याख्याता, शिक्षा विभाग, क्वाज़ुलु नटाल विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका, डॉ. विनोद बाला अरुण, अध्यक्षा, रामायण केंद्र, मॉरीशस तथा श्री नारायण शर्मा मथुरा, अध्यक्ष, नीदरलैंड हिंदी परिषद्, नीदरलैंड आमंत्रित थे।

सुश्री श्रुति पाठक ने अपने संबोधन में सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए रामायण के महत्त्व पर बात की। उन्होंने कहा कि राम कथा गिरमिटिया देशों में बेहद लोकप्रिय है, जिसे जनता बार-बार सुनना-देखना चाहती है। रामायण कथा ने सदैव समाज, परिवार और पूरे राष्ट्र को जोड़ने में एक अहम भूमिका निभाई है। गिरमिटिया देशों में रामायण की परंपरा एक सांस्कृतिक विरासत के रूप में उपस्थित है। भारत से जब मज़दूर बनकर भारतीयों को कई जगह जाना पड़ा, रामायण उनके लिए एक विशेष संबल बनी।

डॉ. लोकेश रामनाथ महाराज ने दक्षिण अफ्रीका में रामायण की स्थिति और उसके उद्भव और विकास के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उनके अनुसार दक्षिण अफ्रीका में रामचरितमानस की कहानी 1860 और 1911 के बीच नटाल के बंदरगाह पर पहुँचने वाले गिरमिटिया मज़दूरों की छोटी-सी पोटली में से शुरू हुई। इन गिरमिटिया लोगों के लिए यह ग्रंथ केवल एक धार्मिक पुस्तक नहीं, बल्कि एक चलता-फिरता घर था, जो विस्थापन के उस कठिन दौर में उनकी भाषाई अस्मिता और नैतिकता का आधार बना। आज के समय में रामचरितमानस वाट्सएप्प और यूट्यूब जैसे डिजिटल मंचों से घर-घर तक पहुँच गया है। समय के साथ यह आधुनिक दक्षिण अफ्रीकी जीवन का एक बुनियादी स्तंभ बन गया है।

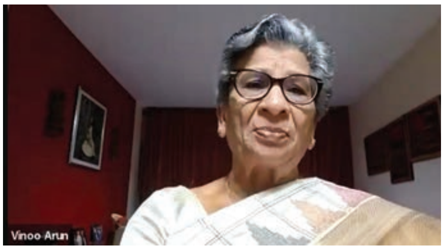

डॉ. विनोद बाला अरुण ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत से जो लोग अलग-अलग देशों में गए, उन्होंने अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और रामायण के मूल्यों को अभी तक अक्षुण्ण रखा है और उन्होंने जो धारा प्रवाहित की वह अब तक निरंतर प्रवाहित हो रही है। मॉरिशस को रामायण का देश कहा जाता है और उसका एक प्रमाण यह भी है कि पूरे विश्व में एकमात्र मॉरिशस ही एक ऐसा देश है, जहाँ की संसद ने विधेयक पारित कर रामायण केंद्र की स्थापना की।

श्री नारायण शर्मा मथुरा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि आज हम किसी भी देश में जाएँ, वहाँ हिंदी भाषा बोलने वाले लोग मिलेंगे। उन्होंने बताया कि नीदरलैंड हिंदी परिषद् निरंतर यह प्रयास कर रहा है कि भावी पीढ़ी हिंदी सीखे, पढ़े और समझे और उसके द्वारा रामायण का प्रचार-प्रसार करे।

डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे, अध्यक्षा, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

तमिलनाडु में अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि संगोष्ठी

22 अप्रैल, 2026 को चेन्नई, तमिलनाडु में नागरी लिपि परिषद् ने तमिलनाडु के एस.आर.एम विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं मानविकी संकाय के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'विश्व लिपि के रूप में नागरी लिपि का महत्त्व' विषय पर एक आभासी अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया। परिषद् के महामंत्री डॉ. हरिसिंह पाल की अध्यक्षता में आयोजित इस संगोष्ठी में नागरी लिपि के मॉरीशस इकाई के प्रभारी डॉ. सोमदत्त काशीनाथ, यूरोप इकाई के संयोजक डॉ.

रामा तक्षक, तमिलनाडु इकाई की प्रभारी डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन, बेंगलुरु के पूर्व प्राचार्य डॉ. इसपाक अली तथा कृष्णा स्वामी महिला महाविद्यालय, चेन्नई की अनुसंधान अधिष्ठाता डॉ. के. आनंदी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

एस.आर.एम विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं मानविकी संकाय की हिंदी विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी संयोजिका डॉ. निशा मुरलीधरन ने स्वागत-भाषण दिया और हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. डी. जय भारती ने कार्यक्रम का संचालन किया। तमिलनाडु के इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में पहली बार नागरी लिपि पर केंद्रित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सात देशों के नागरी लिपि विद्वानों ने प्रतिभागिता की।

इस संगोष्ठी में जर्मनी, फ़िजी, संयुक्त अरब अमीरात तथा भारत के विद्वान, विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों ने साक्षात् और आभासी माध्यम से सक्रिय सहभागिता की। धन्यवाद-ज्ञापन शोधार्थी सुश्री रानी परिहार ने प्रेषित किया।

साभार : नागरी संगम

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप की अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि संगोष्ठी

25 अप्रैल, 2026 को नागरी लिपि परिषद् के ऑस्ट्रेलिया इकाई ने एक अंतर्राष्ट्रीय नागरी लिपि संगोष्ठी (आभासी) का कुशलतापूर्वक आयोजन किया। परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. हरिसिंह पाल की अध्यक्षता में संगोष्ठी संयोजिका डॉ. सुनीता शर्मा ने संगोष्ठी का संचालन किया। संगोष्ठी का मुख्य विषय था 'नई पीढ़ी और नागरी लिपि : सरलता, प्रयोग और अपनापन'। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. हरिसिंह पाल ने कहा कि नागरी लिपि परिषद् का अब कार्यक्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। प्रवासी भारतीयों में नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार की लालसा बढ़ती जा रही है। यह नागरी लिपि परिषद् की विशेष उपलब्धि कही जा सकती है। संगोष्ठी में ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर, तंज़ानिया, दिल्ली तथा तमिलनाडु से विद्वानों ने नागरी लिपि और हिंदी भाषा के शिक्षण के अपने अनुभव साझा किए और विषय पर व्यापक चर्चा की। परिषद् के ऑस्ट्रेलिया इकाई की अध्यक्ष डॉ. सुनीता शर्मा ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आभार : डॉ. सुनीता शर्मा / नागरी संगम

नीदरलैंड में काव्य संध्या

28 जून, 2026 को नीदरलैंड में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड, वैश्विक हिंदी परिवार, वैश्विक भाषा कला एवं संस्कृति संगठन, यूरोप तथा हिंदी की प्रमुख संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में एम.जे. कल्चर हब, अलेमेरे में काव्य संगम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रिटेन के डॉ. पद्मेश गुप्त, संरक्षक, वैश्विक हिंदी परिवार ने की। श्री अनिल जोशी, अध्यक्ष, वैश्विक हिंदी परिवार मुख्य अतिथि रहे तथा श्री कपिल शर्मा, संस्थापक GLAC व ब्रिटेन की सुश्री तितिक्षा विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम का संयोजन अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड की संस्थापिका व अध्यक्षा डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे, हिंदी यूनिवर्स फ़ाउंडेशन के सचिव, श्री विश्वास दुबे तथा वैश्विक हिंदी परिवार से श्री मनीष पांडेय द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में डॉ. पद्मेश गुप्ता, तितिक्षा शाह, बेल्जियम से कपिल कुमार व भारत से आए श्री अनिल जोशी को हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे व उनके पति डॉ. दिनेश ननंन पाँडे द्वारा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड के प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। डॉ. पद्मेश गुप्त ने यूरोप में हिंदी के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग को रेखांकित किया। सुश्री तितिक्षा ने वैश्विक हिंदी परिवार के फ़रवरी 2027 में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन की विशेष रूप से चर्चा की। इस अवसर पर श्री मनीष पांडेय की पुस्तक 'नयी राह' का लोकार्पण हुआ।

कार्यक्रम में 15 से अधिक कवियों द्वारा काव्य-पाठ किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री विश्वास दुबे के मार्गदर्शन में सुश्री जयता ने किया। श्रीमती अपर्णा ने नृत्य की प्रस्तुति की। धन्यवाद-ज्ञापन श्री मनीष पांडेय द्वारा दिया गया।

आभार : डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे

पोर्टलैंड, यू.एस.ए. में 'हिंदी संगम' संस्था द्वारा नौटंकी कार्यशाला

'हिंदी संगम' ने पोर्टलैंड, यू.एस.ए. समुदाय के लिए एक नई और रोमांचक सांस्कृतिक पहल की है - 'नौटंकी', जो उत्तर भारत की सबसे जीवंत, लोकप्रिय और प्रभावशाली लोकनाट्य परंपराओं में से एक है। 23, 25 और 30 जून, 2026 नौटंकी कार्यशाला आयोजित की गई। भारत के प्रतिष्ठित रंगकर्मियों और लोकनाट्य विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में आयोजित इस ऑनलाइन कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों को नौटंकी की समृद्ध परंपरा, उसके इतिहास, अभिनय शैली, संगीत और प्रस्तुति की बारीकियों को सीखने का अनूठा अवसर

रहा। आगे चलकर प्रतिभागियों को एक लाइव नौटंकी मंचन में भाग लेने और मंच पर प्रस्तुति देने का अवसर भी दिया गया। ओरेगन कल्चरल ट्रस्ट तथा बीवरटन आर्ट्स कमीशन ने इस पहल को आंशिक आर्थिक सहयोग प्रदान किया। उनके सहयोग से यह विशेष कार्यशाला सभी प्रतिभागियों के लिए पूर्णतः निःशुल्क आयोजित की गई। कार्यशाला में मार्गदर्शक के रूप में अतुल यदुवंशी, नौटंकी कला विशेषज्ञ एवं निदेशक, स्वर्ग रेपर्टरी, लखनऊ, अजय कुमार, अभिनेता, निर्देशक एवं संगीतकार, दिल्ली तथा अक्षय सिंह ठाकुर, अभिनेता, निर्देशक एवं संगीतकार, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ने साथ दिया और कार्यक्रम का समन्वयन शकील अख़्तर, संस्थापक संपादक, इंदौर स्टूडियो, दिल्ली ने किया। कार्यशाला के अंतर्गत सत्र 1 ‘नौटंकी की उत्पत्ति, इतिहास और प्रस्तुति परंपरा’, सत्र 2 ‘कथावाचन, पात्र-निर्माण, संगीत और काव्य रूप’ तथा सत्र 3 ‘स्वांग, नौटंकी और समकालीन रंगमंच’ विषयों पर आधारित रहा। ये प्रारंभिक सत्र इस सीखने की यात्रा की शुरुआत भर हैं। इसके बाद उन्नत कार्यशालाओं की शृंखला आयोजित की जाएगी, जिनमें अभिनय, संगीत और मंचीय प्रस्तुति का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रतिभागियों को भविष्य में आयोजित होने वाले लाइव नौटंकी मंचन में भाग लेने और मंच पर अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर भी मिलेगा।

साभार : हिंदी संगम की वेबसाइट

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा ‘हिंदी में मंच-संचालन कौशल’ विषय पर कार्यशाला

25 अप्रैल तथा 2 मई, 2026 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रहमण्यम् भारती सभागार में हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा

कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वावधान में ‘हिंदी में मंच-संचालन कौशल’ विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मंच-संचालन की कला, श्रोताओं से प्रभावी संवाद, स्वर-संयोजन, शारीरिक हाव-भाव, प्रोटोकॉल के अनुसार कार्यक्रम संचालन, स्क्रिप्ट-लेखन तथा मंच पर उत्पन्न होने वाली आकस्मिक परिस्थितियों के सफल प्रबंधन जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला के सत्रों का संचालन हिंदी स्पीकिंग यूनियन की अध्यक्षा एवं महात्मा गांधी संस्थान में वरिष्ठ प्राध्यापिका, डॉ. अंजलि चिंतामणि, महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका, डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी तथा भोपाल स्थित कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक, श्री विनय उपाध्याय द्वारा (ऑनलाइन माध्यम से) किया गया।

प्रतिभागियों ने विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया, प्रशनोत्तरी सत्र में सक्रियता दिखाई तथा मंच-संचालन से संबंधित महत्त्वपूर्ण कौशल और आत्मविश्वास अर्जित किया।

साभार : हिंदी स्पीकिंग यूनियन

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा काव्य गीत एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन

29 जून, 2026 को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में विश्व संगीत दिवस के उपलक्ष्य में काव्य गीत एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी काव्य गीतों की प्रस्तुति के साथ विद्वानों द्वारा कविताओं की समीक्षा की गई। इस कार्यक्रम में मॉरीशस के मूर्धन्य हिंदी साहित्यकारों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, विभिन्न हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, कलाकारों, हिंदी प्रेमियों ने सहभागिता की।

सुश्री श्रुति पाठक, द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग ने अपने स्वागत-भाषण में शिव ताण्डव स्तोत्रम् की पंक्तियों का प्रभावशाली पाठ कर संगीत की उत्पत्ति और कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर बात की। उन्होंने कहा कि संगीत और काव्य का मिलन प्रस्तुति को अधिक रोचक तथा मनोहारी बना देता है। विद्वानों द्वारा काव्य के गुण तथा संगीतात्मकता पर विमर्श एवं परिचर्चा ने इस कार्यक्रम को जीवंत बना दिया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के क्रम में महात्मा गांधी संस्थान के हिंदुस्तानी गायन संगीत

शिक्षक श्री मोहरलाल चमन ने प्रसिद्ध कवि गोपालदास नीरज की कविता 'कारवाँ गुज़र गया' का भावपूर्ण गायन किया। इसके उपरांत हिंदी लेखक श्री धनराज शम्भु ने कविता का

समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए उसके साहित्यिक एवं दार्शनिक पक्षों पर प्रकाश डाला। कवि एवं लेखक, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता का हिंदी तथा बंगला भाषा में प्रभावी गायन प्रस्तुत किया। श्री संतोष, श्री अरुण तथा श्री हल्कू की टोली द्वारा हरिवंशराय बच्चन की अमर रचना 'मधुशाला' का

सुमधुर संगीतमय प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रस्तुति के पश्चात् डॉ. अलका धनपत, वरिष्ठ प्राध्यापिका, महात्मा गांधी संस्थान ने कविता की समीक्षा की तथा डॉ. माधुरी रामधारी, अध्यक्षा, भारतीय अध्ययन विद्यालय, महात्मा गांधी संस्थान ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा ने जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' के 'लज्जा' सर्ग का सुरबद्ध पाठ किया। इस प्रस्तुति पर उपस्थित विद्वानों ने अपने विचार एवं समीक्षात्मक टिप्पणियाँ साझा कीं। कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति श्री हिमेश गुरापा की थी, जिन्होंने मैथिलिशरण गुप्त द्वारा रचित भारत-भारती से "मानस-भवन में आर्य जन, जिसकी उतारें आरती" का सुमधुर गायन प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के समापन चरण में सभी काव्यगीत गायक को भारतीय उच्चायोग की तरफ़ से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम सारगर्भित रहा और प्रतिभागियों द्वारा खूब सराहा गया। सभी विद्वानों, सहित्यकारों, बुद्धिजीवियों एवं संगीत कलाकारों ने बढ़-चढ़कर काव्य विश्लेषण एवं परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के समापन पर सुश्री श्रुति पाठक ने सभी विद्वानों, काव्य प्रेमियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। मंच-संचालन श्री मनोज कुमार शुक्ला, वरिष्ठ सहायक संपादक, विश्व हिंदी सचिवालय ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) में तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड'

पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) स्थित भारत भवन में शुक्रवार 8 मई, 2026 से तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड' का शुभारंभ हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय तथा वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से 60 से अधिक संपादक, पत्रकार, लेखक और मीडिया विशेषज्ञ शामिल हुए। इस आयोजन में पत्रकारिता, भारतीय चिंतन, संस्कृति और मीडिया के बदलते स्वरूप पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह, आचार्य मिथिलेश नंदिनीशरण और फ़िल्मकार डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी समेत कई प्रमुख वक्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंतर्गत एक विशेष सत्र 'उत्तिष्ठ भारत' में आचार्य मिथिलेश नंदिनीशरण ने अपना पाथेय प्रदान किया और उपस्थित विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पंडित युगलकिशोर शुक्ल जी ने 200 वर्ष पहले एक ही पंक्ति "हिंदुस्तानियों के हित के हेत" लिखकर सदियों के लिए पत्रकारिता का नैरेटिव तय कर दिया था।

वरिष्ठ संपादक श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अक्षर ब्रह्म होता है और उस अक्षर से जो शब्द निर्मित होता है, परब्रह्म होता है। वरिष्ठ संपादक श्री राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने 'उत्तिष्ठ भारत' का आह्वान सोए हुए भारत को जगाने के लिए किया। इस सत्र का संचालन वरिष्ठ पत्रकार शिफ़ाली पांडेय ने किया।

कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने आधुनिक तकनीक और पत्रकारिता के सामने मौजूद चुनौतियों पर गंभीर बात की।

इस अवसर पर 'माखन के लाल' पुस्तक, 'कार्टून कथा' कॉफ़ी टेबल बुक, 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' समाचार-पत्र, 'अभ्युदय' - नए सत्र के शुभारंभ पर केंद्रित समाचार पत्रिका तथा 'पहल' समाचार-पत्र का लोकार्पण किया गया।

साभार : माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल की औपचारिक वेबसाइट

वियतनाम में 24वाँ साहित्यिक महोत्सव

19 से 23 जून, 2026 तक अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति के तत्त्वावधान में वियतनाम के हो ची मिन्ह शहर स्थित डायमंड हिल होटल में 24वें साहित्यिक महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव के अंतर्गत 20 जून को सम्मान-समारोह एवं काव्य-गोष्ठी संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं 'प्रज्ञान विश्वम्' पत्रिका के संस्थापक-संपादक पंडित सुरेश नीरव ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त मेजर कर्नल अनूप कुमार उपस्थित रहे। मंच पर वरिष्ठ साहित्यकार, ज्ञान चंद मर्मज्ञ, इंडिया नेटबुक्स के चेयरपर्सन एवं अधिवक्ता, डॉ. संजीव कुमार तथा साहित्यकार, डॉ. प्रकाश उपाध्याय विराजमान रहे।

अपने उद्बोधन में पं. सुरेश नीरव ने कहा कि वियतनाम में हिंदी का यह पहला साहित्यिक आयोजन है, जो हिंदी के वैश्विक विस्तार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना डॉ. अनुराधा दूबे ने गणेश वंदना की मनोहारी प्रस्तुति की। महोत्सव के दौरान डॉ. प्रकाश उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित 'प्रज्ञान विश्वम्' के विशेषांक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर पं. सुरेश नीरव सहित अनेक साहित्यकारों, समाजसेवियों एवं सांस्कृतिक हस्तियों को माल्यार्पण, अंगवस्त्र और प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान-समारोह के पश्चात् आयोजित काव्य गोष्ठी में देश-विदेश से आए रचनाकारों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। ऑनलाइन प्रसारण के माध्यम से भी देश-विदेश के साहित्यप्रेमियों ने कार्यक्रम में सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राखी सिंह कटिहार ने किया। वरिष्ठ साहित्यकार ममता कुमार ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

रिपोर्ट - कुमार सुबोध

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की वेबसाइट

गुजरात में 'भारतीय भाषा संगम 2.0'

28-29 अप्रैल, 2026 को गुजरात साहित्य अकादमी, गुजरात सरकार तथा भारतीय भाषा मंच के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा संगम 2.0' उत्सव का भव्य आयोजन स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी, केवड़िया, वडोदरा में नर्मदा नदी के तट पर संपन्न हुआ।

यह दो दिवसीय आयोजन भारतीय भाषाओं के संवर्धन, संरक्षण और उनके माध्यम से विकसित भारत के निर्माण पर केंद्रित रहा। कार्यक्रम में देशभर से आए विद्वानों, साहित्यकारों और भाषा विशेषज्ञों ने विभिन्न आयामों पर गंभीर विमर्श किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के संस्कृति मंत्री माननीय श्री गजेंद्र सिंह शेखावत उपस्थित रहे। साथ ही, राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह ने भी कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री, श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्त्व प्रदान किया। गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, डॉ. भाग्येश झा और महासचिव डॉ. जयेंद्र सिंह जाधव ने आयोजन की रूपरेखा और उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इस मंच पर विभिन्न सत्रों में भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति, उनके विकास की संभावनाएँ तथा डिजिटल युग में भाषाओं की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। विशेष रूप से 'विकसित भारत के निर्माण में भारतीय भाषाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित परिसंवाद ने सभी प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया।

वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। नई शिक्षा नीति और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से भाषाओं को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया गया।

समापन-सत्र का यह निष्कर्ष रहा कि यदि भारत को वास्तव में विकसित राष्ट्र बनाना है, तो भारतीय भाषाओं को शिक्षा, प्रशासन और तकनीक के क्षेत्र में व्यापक रूप से अपनाना होगा।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की वेबसाइट / Voice of the Nation – O.RGANISER

मॉरीशस में तिलक विद्यालय का शताब्दी समारोह

मॉरीशस की हिंदी प्रचारिणी सभा की प्रथम बैठका की स्थापना 12 जून, 1926 को हुई थी। उस पाठशाला को भारत के स्वतंत्रता

सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का नाम दिया गया था। आज भी 'तिलक विद्यालय' मोंताई लोंग गाँव में कार्यरत है। सम्प्रति विद्यालय में 151 छात्र हिंदी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

14 जून, 2026 को हिंदी प्रचारिणी सभा ने तिलक विद्यालय का शताब्दी समारोह मनाया। इस कार्यक्रम में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री धरमबीर गोकुल, जी.सी.एस.के., स्वास्थ्य और कल्याण मंत्री, माननीय श्री अनिल कुमार बेचु, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. महेंद गंगापरसाद, पी.डी.एस.एम., भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव तथा सांसद गण की गरिमामयी उपस्थिति रही। भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), सुश्री श्रुति पाठक, साहित्यिक, धार्मिक तथा शैक्षिक संस्थाओं के प्रमुख, अभिभावक तथा छात्र गण ने भी समारोह में भाग लिया।

भारत के लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के परपोते श्री सैलेश श्रीकांत एक प्रतिनिधिमंडल के साथ शताब्दी समारोह में भाग लेने आए थे। उन्होंने तिलक जी की एक प्रतिमा हिंदी प्रचारिणी सभा को भेंट की। सभा के प्रांगण में स्थापित उस प्रतिमा का अनावरण सभी गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया।

हिंदी प्रचारिणी सभा की अध्यक्षा, श्रीमती रोहिणी रामरूप ने अपने वक्तव्य में कहा कि उन्होंने अपने पूर्वजों को घास और लकड़ी से निर्मित तिलक विद्यालय में संघर्ष करते देखा है। तिलक विद्यालय के संस्थापकों का उद्देश्य था विद्यालय में हिंदी भाषा ज्ञान द्वारा संस्कृति को सुरक्षित रखना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोग रात्रि में हिंदी पढ़ते थे तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित करते थे, हालाँकि उन दिनों बिजली तथा अन्य सुविधाएँ नहीं थीं। उन महान पूर्वजों के कारण तिलक विद्यालय उन्नति की राह पर आगे बढ़ती रही। अंत में सभा की अध्यक्षा ने धन्यवाद-ज्ञापन दिया।

आभार : श्रीमती रोहिणी रामरूप, अध्यक्षा, हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस

मॉस्को में हिन्दुस्तानी समाज का पुरस्कार-वितरण-समारोह

10 जून, 2026 को भारतीय दूतावास, मॉस्को के डी. पी. धर सभागार में पद्मश्री मदन लाल मधु अनुवाद प्रतियोगिता के प्रतिभागियों और विजेताओं के लिए पुरस्कार-वितरण-समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन भारतीय दूतावास तथा जवाहरलाल नेहरू सांकृतिक केंद्र के सहयोग से 'हिन्दुस्तानी समाज' द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय राजदूत श्री विनय कुमार उपस्थित रहे। 'हिन्दुस्तानी समाज' के सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष और मंच-संचालक श्री संतोष मिश्रा ने समारोह की शुरूआत करते हुए सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। उसके बाद समाज के प्रधान डॉ. कश्मीर सिंह ने सभा को सम्बोधित करते हुए बताया कि मदन लाल मधु अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन वर्ष 2015 से निरंतर किया जाता रहा है, जिसमें मॉस्को के विभिन्न उच्च-शिक्षा संस्थानों के छात्र बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं। उन्होंने अपने उन सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। महामहिम राजदूत श्री विनय कुमार ने पद्मश्री मदन लाल मधु अनुवाद प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए हिन्दुस्तानी समाज की टीम को बधाई दी और रूस में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस अनुवाद प्रतियोगिता के महत्त्व पर बल दिया। पद्मश्री प्रो. ल्युदमिला खख्लोवा तथा मॉस्को में ब्रह्मकुमारी संस्थान की प्रमुख सुधा दीदी ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए उनका मार्गदर्शन किया। हिन्दुस्तानी समाज की महासचिव श्रीमती प्रगति टिपणिस ने अनुवाद की कला पर अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी के अध्यापक सेर्गेयी फ़ेदोतोव और मक्सिम देम्चेन्को ने बताया कि अनुवाद प्रतियोगिता रूसी विद्यार्थियों को हिंदी सिखाने का एक बढ़िया प्रेरणा-स्रोत है। भारतीय दूतावास की प्रथम महिला श्रीमती इयोना सिन्हा ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

साभार : हिन्दुस्तानी समाज, रूस

विश्व काव्य दिवस एवं हिंदी डिप्लोमा-वितरण-समारोह

सूरीनाम हिंदी परिषद् द्वारा विश्व काव्य दिवस के उपलक्ष्य में एक प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न हिंदी विद्यालयों के शिक्षकों को हिंदी डिप्लोमा भी प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का पहला भाग पूरी तरह काव्य को समर्पित था। इसके पश्चात् श्रीमती इंदिरा रामदिन ने विश्व काव्य दिवस के महत्त्व और उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा अपनी एक कविता भी प्रस्तुत की। विभिन्न प्रतिभागियों ने मंच पर आकर अपनी-अपनी कविताएँ

प्रस्तुत कीं। विशेष आकर्षण रघुबीर शुशांतानी की प्रस्तुति रही, जिन्होंने दोहों का वाचन करते हुए उनकी सुंदर व्याख्या भी की।

कार्यक्रम के दूसरे भाग में डिप्लोमा वितरण किया गया। परीक्षा समिति की अध्यक्षा, श्रीमती ललाराम-हार्डवारसिंग लैला ने परीक्षा परिणामों का विवरण प्रस्तुत किया।

उन्होंने अपने संबोधन में शिक्षकों की सराहना करते हुए उन्हें हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में निरंतर योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रत्येक स्तर के श्रेष्ठ सफल अभ्यर्थियों को पुरस्कृत किया गया। उनको डिप्लोमा के साथ-साथ भगवद् गीता का डच भाषा में अनूदित संस्करण भी प्रदान किया गया, जिसे स्टिचिंग जागरण मंडल सूरीनाम द्वारा भेंट किया गया था।

कार्यक्रम के तीसरे भाग में एस.वी.सी.सी. के निदेशक डॉ. सोमवीर आर्य को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष, श्री सत्यानंद प्रमसुख ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। कार्यक्रम का समापन सुंदर भजनों के साथ हुआ। ज्योति महादेवमिसियर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

आभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् / डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे

मॉरीशस में हिंदी समाज के साथ खुली बैठक

6 जून, 2026 को मोका फ़्लाक सरोज संघ हिंदी पाठशाला, मॉरीशस में अभिभावकों एवं हिंदी प्रेमियों के साथ खुली बैठक आयोजित हुई। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पाठशाला, अभिभावकों तथा समुदाय के बीच सहयोग और संवाद को सुदृढ़ करना था।

कार्यक्रम के प्रारंभ में हिंदी पाठशाला के सचिव श्री सहलील तोपासी ने स्वागत-वक्तव्य दिया। उन्होंने संस्था की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बैठकाओं ने नई पीढ़ी में हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ हिंदी, भोजपुरी और संस्कृत जैसी भाषाओं के अध्ययन से बच्चों का अपनी भाषाई एवं सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव बना रहता है तथा उनमें भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।

इस अवसर पर शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक निदेशक (डायरेक्टोरेट : सेकेंडरी एजुकेशन), श्री निरंजन बिगन तथा भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), सुश्री श्रुति पाठक ने प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीत, नृत्य, नाटक, वाद-विवाद और खेल, बच्चों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना तथा प्रभावी सम्प्रेषण-कला का विकास करती हैं। ये गतिविधियाँ उनके सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं और उन्हें ज़िम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनने के लिए तैयार करती हैं। उन्होंने अभिभावकों से भी अपने बच्चों की शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास में सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया। साथ ही, शिक्षण प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के प्रभावी समावेश द्वारा शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति पर भी विशेष बल दिया गया।

साथ ही इस अवसर पर हिंदी एवं रामायण पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन हुआ। सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों को भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें प्रदान की गईं। साथ ही, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस ने इस बैठका को भी पुस्तकें दान में दीं।

तत्पश्चात् संस्था के दो शिक्षकों, किशन एवं जिष्णु ने एक प्रस्तुति के माध्यम से मोका फ़्लाक सरोज संघ हिंदी पाठशाला के उद्देश्यों, विभिन्न शिक्षण स्तरों तथा प्रथम कक्षा से उत्तमा तृतीय खंड तक पढ़ाए जाने वाले विषयों की विस्तृत जानकारी दी। प्रस्तुति में संस्था द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियों तथा शिक्षकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यशालाओं का भी परिचय कराया गया। इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता दिवस समारोह, देशाटन तथा अन्य सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के चित्रों का प्रदर्शन किया गया। स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित संस्था के विद्यार्थियों तथा पूर्व विद्यार्थियों की उपलब्धियों से भी सभी को अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंत में अभिभावकों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अपने प्रश्न पूछे तथा शिक्षकों एवं अतिथियों के साथ सार्थक संवाद किया।

श्री सहलील तोपासी की रिपोर्ट

मुम्बई (महाराष्ट्र, भारत) में एक विमर्श, रचना-पाठ और स्नेह मिलन

2 जून, 2026 को हिंदुस्तानी प्रचार सभा में भारतीय भाषा के लेखकों और विद्वानों का एक विमर्श, रचना-पाठ और स्नेह मिलन आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली के विद्वान श्री अनिल जोशी थे। इस अवसर पर मुम्बई के अनेक लेखक, कवि और अनुवादक उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के निदेशक डॉ. मनप्रीत कौर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सभी अभ्यागतों का स्वागत किया। सभा के वरिष्ठ कार्यकारी संजय मांजरेकर ने शॉल देकर मुख्य अतिथि का सम्मान किया। लेखक-प्राध्यापक डॉ. रवींद्र कात्यायन, अभिनेता-लेखक नवीन भास्कर, लेखक-प्राध्यापक दिनेश पाठक तथा कथाकार, अनुवादक रमेश यादव ने अपने विभिन्न साहित्यिक उपलब्धियों और उपक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथी श्री अनिल जोशी ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया। उन्होंने सभा के साथ मिलकर भविष्य में विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। इस आयोजन में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के कर्मचारियों ने भागीदारी की और विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी दी। सभा के परियोजना समन्वयक राकेश कुमार त्रिपाठी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

आभार : श्री अनिल जोशी

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा लोकभाषा में रचना-पाठ

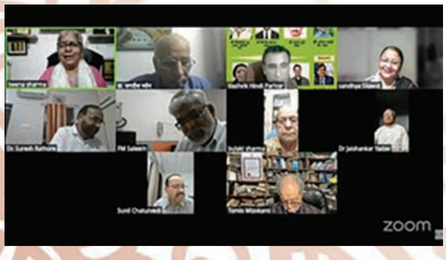

17 मई, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद्, वातायन तथा भारतीय भाषा मंच के संयुक्त तत्त्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार ने 'लोकभाषा में रचना-पाठ' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' द्वारा आत्मीय स्वागत उद्बोधन से हुई, जिसमें उन्होंने वैश्विक मंच पर जुड़े सभी सम्मानित अतिथियों और देश-विदेश के रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन किया। इस महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की पूर्व निदेशक बीना शर्मा ने की, जिन्होंने ब्रज भाषा की मिठास और उसके ऐतिहासिक महत्त्व को बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से रेखांकित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित राजस्थानी साहित्यकार बुलाकी शर्मा उपस्थित थे, जिन्होंने लोकभाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली सरकार के उप शिक्षा निदेशक डॉ. जगदीश व्योम ने कन्नौजी भाषा की भाषाई विशेषताओं और उसके साहित्यिक योगदान पर अपना अत्यंत सारगर्भित व सारवान व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री मनोज भावुक ने काव्य-पाठ कर लोक कला और जनभावनाओं का जीवंत ताना-बाना बुना। इसी क्रम में हैदराबाद से जुड़े 'दैनिक हिंदी मिलाप' के ब्यूरो चीफ़ एफ़.एम. सलीम ने दक्खिनी हिंदी की अनूठी शैली में अपनी रचना प्रस्तुत की, जिसने भाषाई विविधता की सुंदरता को और अधिक गहरा किया। शासकीय हाईस्कूल की सेवानिवृत्त प्रभारी प्राचार्या डॉ. शशि निगम ने मालवी भाषा में अपनी मधुर और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध सरस्वती वंदना तथा रचना-पाठ को प्रस्तुत किया। इन सभी रचनाकारों के उत्कृष्ट पाठ ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत की असली पहचान उसकी भाषाई विविधता और आंचलिक बोलियों की सहज अभिव्यक्ति में ही निहित है। कार्यक्रम की मुख्य संयोजक और राज्य कर उपायुक्त एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. संध्या सिलावट ने मंच-संचालन किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हिंदी की उन जड़ों को सींचना और सम्मानित करना था, जो देश की विभिन्न लोकभाषाओं और बोलियों के रूप में भारतीय संस्कृति की आत्मा को जीवंत रखे हुए हैं। उपस्थित वक्ताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जब तक लोकभाषाएँ समृद्ध और सुरक्षित रहेंगी, तब तक हिंदी की वैश्विक यात्रा निरंतर, सशक्त एवं प्रासंगिक बनी रहेगी। कार्यक्रम के अंतिम चरण में डॉ. सुरेश सिंह राठौड़ ने सभी सहयोगियों, आयोजकों और तकनीकी टीम के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए औपचारिक रूप से धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की वेबसाइट

न्यू जर्सी, अमेरिका में हिंदी नाटक 'जैसा तुम कहो' का मंचन

2 मई, 2026 को न्यू जर्सी, अमेरिका में आँकोर थिएटर फ़ेस्टिवल में प्रयोग थिएटर ग्रुप द्वारा हिंदी नाटक 'जैसा तुम कहो' का मंचन हुआ। यह एक दमदार हिंदी नाटक है, जो रिश्तों, भावनाओं और भारतीय पारिवारिक मूल्यों के सार को खूबसूरती से लक्षित करता है। नाटक के कलाकार - धनाश्री वैद्य, दीपक गुप्ता, गौरव मेहता, माधवी कदम और शैल चोकसी रहे। मंचन को सफल बनाने में गीतांजलि गुप्ता, अनु मेहता, ब्रायन ग्रोड्ज़की और धनंजय निचकावडे की टीम का योगदान भी सराहनीय रहा। ONEJari - Art Craft&Music ने मंच प्रदान किया।

साभार : प्रयोग थिएटर ग्रुप का फ़ेसबुक पेज

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा प्राथमिक विद्यालय के लिए आयोजित हिंदी कहानी-कथन प्रतियोगिता का भव्य फ़ाइनल

28 मई, 2026 को कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वावधान में हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने पोर्ट लुई नगरपालिका में कक्षा 5 एवं 6 के विद्यार्थियों के लिए प्राथमिक विद्यालय हिंदी कहानी-कथन प्रतियोगिता के भव्य फ़ाइनल का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

इस अवसर पर कला एवं संस्कृति मंत्री, माननीय महेंद्र गोंडिया, ओ.एस.के., मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पोर्ट लुई की लॉर्ड मेयर, श्रीमती क्रिस्टेल पॉन्डार्ड तथा उपमहापौर, सुश्री मेहज़ाबीन करमताली विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

प्रतियोगिता के प्रारंभिक चरण में देश भर के लगभग 100 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। फ़ाइनल में प्रतिभागियों ने आत्मविश्वास, रचनात्मकता, शुद्ध उच्चारण तथा प्रभावशाली कहानी-कथन कौशल से दर्शकों और निर्णायकों को प्रभावित किया।

माननीय महेंद्र गोंडिया, ओ.एस.के. ने सभी प्रतिभागियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को उनकी लगन एवं निरंतर सहयोग के लिए बधाई दी। उन्होंने हिंदी स्पीकिंग यूनियन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की पहल युवा पीढ़ी में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, संप्रेषण-कौशल, रचनात्मकता तथा भाषा के प्रति सम्मान विकसित करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

विजेताओं को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के सम्मान में ट्रॉफ़ियाँ, पदक एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी फ़ाइनलिस्ट

को उनकी सहभागिता और प्रतियोगिता के दौरान किए गए सराहनीय प्रयासों के लिए सांत्वना पुरस्कार एवं पदक प्रदान किए गए।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा माध्यमिक विद्यालय के लिए आयोजित हिंदी भाषण प्रतियोगिता का भव्य फ़ाइनल

3 जून, 2026 को कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वावधान में हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने पोर्ट लुई नगरपालिका में कक्षा 10, 11 एवं 12 के विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक विद्यालय हिंदी भाषण प्रतियोगिता के भव्य फ़ाइनल का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस अवसर पर पोर्ट लुई की लॉर्ड मेयर, श्रीमती क्रिस्टेल पॉन्डार्ड, उपमहापौर, सुश्री मेहज़ाबीन करमताली तथा संस्कृति विभाग की उपनिदेशिका, श्रीमती अनुपमा चमन-चोमू विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

इस प्रतियोगिता में मॉरीशस के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता ने उन्हें अपनी वाक्पटुता, भाषाई दक्षता तथा हिंदी भाषा के प्रति अपने ज्ञान और सम्मान का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच प्रदान किया। प्रतिभागियों ने **'हिंदी का बदलता स्वरूप'** तथा **'नई पीढ़ी, नई सोच'** विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अपने प्रभावशाली भाषणों के माध्यम से विद्यार्थियों ने आधुनिक युग में हिंदी भाषा के बदलते आयामों तथा प्रगतिशील एवं समावेशी भविष्य के निर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका पर प्रकाश डाला। उनके भाषणों में डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता के साथ-साथ उसकी समृद्ध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत के संरक्षण के महत्त्व पर भी विशेष बल दिया गया।

अपने संबोधन में विशिष्ट अतिथियों ने विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रभावशाली वक्तृत्व-कौशल तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की सराहना की। उन्होंने बहुभाषिकता, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की सक्रिय भागीदारी के महत्त्व पर विशेष बल दिया।

अत्यंत रोमांचक अंतिम दौर के पश्चात् विजेताओं को विशिष्ट अतिथियों द्वारा नकद पुरस्कार, शील्ड एवं पदक प्रदान किए गए।

साभार : हिंदी स्पीकिंग यूनियन

हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन, मॉरीशस द्वारा राष्ट्रीय रामायण-पाठ प्रतियोगिता

11 अप्रैल, 2026 को हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन, मॉरीशस द्वारा मोंचिदा एस. रामधिन सरकारी पाठशाला में राष्ट्रीय रामायण-पाठ प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विशिष्ट अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य रामायण की समृद्ध आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करना तथा युवा पीढ़ी में हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता और रुचि विकसित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के आगमन, पारंपरिक दीप-प्रज्वलन, पेची वेर्ज़े हिंदी शाखा द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक नृत्य तथा हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन के अध्यक्ष श्री प्रेमदीप चमन के स्वागत-भाषण के साथ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री श्रुति पाठक, द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग उपस्थित रहीं।

समारोह में डॉ. माधुरी रामधारी, अध्यक्षा, भारतीय अध्ययन विद्यालय, महात्मा गांधी संस्थान तथा हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन की शैक्षिक एवं अकादमिक सलाहकार, श्री नीरंजन बिगन, कार्यवाहक निदेशक (डायरेक्टोरेट : सेकेंडरी एजुकेशन), शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, श्री राज किसुन, अध्यक्ष, फ़्लाक ज़िला परिषद्, श्री अनिल गणेश, बैरिस्टर-एट-लॉ तथा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों के अध्यक्ष एवं प्रतिनिधिगण की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी अतिथियों ने अपने प्रेरणादायी संदेशों के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहने हेतु प्रोत्साहित किया।

हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन ने मोंचिदा एस. रामधिन सरकारी पाठशाला के प्रबंधन एवं समस्त कर्मचारियों, प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 9 हिंदी विद्यालयों, स्वयंसेवकों, अभिभावकों तथा सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

आभार : हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन

'नेपाल के सन्दर्भ में हिंदी' विषयक कार्यक्रम आयोजित

काठमांडू में हिमालयन लिटरेचर फ़ेस्टिवल तथा राइटर वर्कशॉप 2026 के अंतर्गत 4 जून, 2026 को 'हिमालिनी' द्वारा 'नेपाल के सन्दर्भ में हिंदी' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। हिंदी एवं नेपाली भाषा साहित्य के क्षेत्र से ख्याति प्राप्त डॉ. उषा ठाकुर, नेपाली रंगमंच की प्रसिद्ध कलाकार निशा शर्मा तथा त्रिभुवन विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के उप-प्राध्यापक दिवाकर उपाध्याय कार्यक्रम में परिचर्चा के मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम का संपादन हिंदी केंद्रीय विभाग त्रिभुवन विश्वविद्यालय की अध्यक्ष डॉ. श्वेता दीति ने किया। समारोह में भारतीय दूतावास के PIC प्रमुख श्री बशिष्ठ नन्दन जी की उपस्थिति रही।

नेपाली साहित्य पर हिंदी साहित्य का क्या प्रभाव है तथा हिंदी और नेपाली साहित्य में आध्यात्मिक चेतना किस तरह व्याप्त है, नेपाल के साहित्य पर बनारस का प्रभाव, नेपाली और हिंदी रंगमंच के साझा प्रयास, और भारत के नेपाली साहित्य पर विस्तृत चर्चा की गई। इन विषयों पर सभी विद्वानों ने अपनी-अपनी बात रखी।

निष्कर्ष के रूप में यह बात सामने आई कि साहित्य, कला की सीमा नहीं होती और नेपाल भारत का सम्बंध सदियों पुराना है, इसलिए हमारा साहित्य और संस्कृति भी साझी है, जिसे अलग नहीं किया जा सकता है।

साभार : हिमालिनी

साक्षात्कार

'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम

6 अप्रैल, 2026 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में नीदरलैंड से डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडेय का साक्षात्कार लिया गया। डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडेय भारत की बेटी हैं, सूरीनाम की बहु हैं और नीदरलैंड में कार्यरत हैं। अपने साक्षात्कार में डॉ. ऋतु शर्मा ने अपने पूर्वजों के संघर्ष को याद किया और मॉरीशस के समान ही सूरीनाम में शर्तबंध मज़दूरों के आगमन और बैठकाओं के गठन पर चर्चा की। उसके बाद उन्होंने कहा कि वे घर में सर्नामी हिंदी बोलती हैं। सर्नामी हिंदी भोजपुरी के बहुत पास है, लेकिन समय के चलते उसमें बहुत सारे क्रियोल और डच भाषा के शब्द भी आ गए। जैसे कि "कैसन बाती, कहाँ गईल" आदि। उनके अनुसार

जितने भी हिंदी भाषी थे, जब वे अन्य देशों में गए, तो उन्होंने स्वेच्छा से अपनी भाषा को जीवित रखने के लिए बहुत परिश्रम किया और आज इसीलिए विश्व में हिंदी तीसरे स्थान पर आती है। तो यह बहुत बड़ी बात है। कहीं-न-कहीं भारतीयों ने देश-विदेश जाकर हिंदी को कायम रखा है। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे के प्रति आभार व्यक्त किया।

20 अप्रैल, 2026 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में भारत के 'संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बदरीनारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस' की अध्यक्षा डॉ. अंजना सिंह सेंगर साक्षात्कार के लिए वक्ता के रूप में आमंत्रित थीं। विश्व हिंदी सचिवालय की 18वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बदरीनारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस' के छात्रों द्वारा हिंदी साहित्य के चार प्रमुख कवियों - सूरदास, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं तथा उनसे संबंधित चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई थी, जिसपर डॉ. सेंगर द्वारा विस्तृत चर्चा हुई। डॉ. अंजना ने कहा कि जब उनको विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से आमंत्रण मिला, तो संगोष्ठी के विषय को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपनी संस्था एवं पाठशालाओं के छात्रों से उपर्युक्त कवियों की चित्रकारी करवाई और उसकी प्रदर्शनी मॉरीशस में लगाई, जिससे बच्चों की प्रतिभा लोगों तक पहुँची। उन्होंने अपनी पाठशालाओं में हिंदी के प्रचार, विद्यार्थियों की लगन और अपनी परियोजनाओं के संदर्भ में अपने अनुभव साझा किए। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉ. अंजना सिंह सेंगर को धन्यवाद दिया।

18 मई, 2026 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में 'स्वर्ण-गंगा' तंज़ानिया के अध्यक्ष श्री देवेंद्र नाथ पाठक का साक्षात्कार प्रसारित हुआ। उन्होंने कहा कि वे मूलत: बिहार से हैं और हिंदी से उन्हें विशेष लगाव है। वे जब भारत में थे, तो हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े रहे। 2006 में जब वे तंज़ानिया गए, तो उन्होंने पाया कि वहाँ भी कई भारतवासी हैं और उन्होंने 'स्वर्ण गंगा' संस्था की स्थापना की, जिससे कि सभी भारतवासी जुड़ सकें। संस्था का मूल वाक्य है -'संस्कृति से समृद्धि'। श्री देवेंद्र नाथ पाठक ने कहा कि उनका उद्देश्य यह था कि हिंदी भारत की भाषा है और इस भाषा का प्रचार-प्रसार तंज़ानिया में भी हो। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कई प्रयास किए, ताकि लोग हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित हों। उन्होंने विश्व हिंदी दिवस, हिंदी दिवस व अन्य कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया। उन्होंने तंज़ानिया में हिंदी भाषा शिक्षण पर तथा हिंदी सीखने के प्रति बच्चों की रुचि पर भी विस्तार से चर्चा की। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने श्री देवेंद्र नाथ पाठक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

1 जून, 2026 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में इंग्लैंड से डॉ. एश्वरज कुमार का साक्षात्कार लिया गया। वर्तमान में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में हिंदी भाषा का अध्यापन करते हैं। उन्होंने अपने साक्षात्कार में बताया कि विश्व हिंदी सचिवालय की संगोष्ठी में वक्ता के रूप में उन्होंने यहाँ के विद्यार्थियों और अध्यापकों के साथ हिंदी शिक्षण के संदर्भ में अपनी कठिनाइयों को साझा किया और यहाँ की चुनौतियों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन के अपने अनुभवों को साझा करते हुए, उन्होंने बताया कि उनके विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ने वालों की संख्या बहुत है। हिंदी सीखने वाले अहिंदी-भाषी विद्यार्थियों की संख्या भी बहुत है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी और छायावादी कवियों पर आधारित चित्र प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम अधिक होने चाहिए। संभवत: बच्चे जब कविताओं को संगीत के रूप में सुनेंगे, प्रदर्शनी में बड़े अक्षरों में लिखा हुआ देखेंगे-पढ़ेंगे, उनका सामना बार-बार ऐसी चीज़ों से होगा, तो उनके मस्तिष्क व मन में बैठ जाएगा कि सहज रूप में हिंदी में अभिव्यक्ति हो सकती है। फिर उनका मन हिंदी बोलने व पढ़ने में लगेगा। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉक्टर एश्वरज कुमार के प्रति आभार प्रकट किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश, भारत) में 'खिड़की पर बैठी कविता' पुस्तक का लोकार्पण

15 मई, 2026 को वैशाली स्थित मगध स्काईटेक, गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश, भारत) में साहित्य एवं समाज को समर्पित संस्था सरन शब्द-गुंजन के तत्त्वावधान में लेखिका श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल के काव्य-संग्रह 'खिड़की पर बैठी कविता' का भव्य लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा ने की। मुख्य अतिथि श्री अशोक गुप्ता और विशिष्ट अतिथि डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति एवं डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी' रहे। आयोजक विकास अग्रवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। मंच-संचालन नयन नीरज 'नायाब' ने किया। डॉ. सविता चड्ढा ने पुस्तक में ईश वंदना को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि जो स्त्रियाँ घर और कार्यक्षेत्र दोनों में संतुलन बनाकर चलती हैं, वही सही मायनों में सफल होती हैं। मुख्य अतिथि श्री अशोक गुप्ता, विशिष्ट अतिथि डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी' और डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ने भी अपने विचार रखे। नयन नीरज 'नायाब' ने कहा कि पुस्तक में पिता की छाँव, माँ-बेटी का रिश्ता, मिट्टी से जुड़ाव और जीवन के अनेक

महत्त्वपूर्ण मनकों को सुंदर भावभूमि के साथ पिरोया गया है। लेखिका श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल ने पुस्तक के नामकरण के पीछे की भावना साझा की। कार्यक्रम में नन्हीं गुंजन की मनमोहक नृत्य प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। समारोह में ट्रू मीडिया, काव्य मंजरी मंच, डॉ. सविता चड्ढा, डॉ. अर्चना गर्ग, श्रीमती दीपिका वल्दिया, श्रीमती पूजा श्रीवास्तव एवं श्रीमती बबली सिन्हा 'वान्या' द्वारा लेखिका श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल को साहित्यिक योगदान हेतु विशेष सम्मान प्रदान किया गया।

साभार : राष्ट्रीय जनमोर्चा

फ़रीदाबाद, भारत में '101 मंगल विचार' पुस्तक का लोकार्पण सम्पन्न

3 जून, 2026 को फ़रीदाबाद, भारत के सरोवर पोर्टिको, मैपल हॉल में कवयित्री, मंच संचालिका सुमन माहेश्वरी की सद्यः प्रकाशित पुस्तक '101 मंगल विचार' का लोकार्पण समारोह सुमन माहेश्वरी के 75वें जन्मदिवस पर आयोजित हुआ। इस अवसर पर उन्हें अनीता वर्मा की समूह प्रस्तुति - 'खुला मंच' द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजयोगिनी बी.के. सपना ने कहा कि सुमन माहेश्वरी इस पुस्तक के माध्यम से अपने भीतर की सरलता व सहजता को व्यक्त करती हैं। अनीता वर्मा ने पुस्तक पर चर्चा करते हुए कहा कि यह पुस्तक अपने आप में अलग तरह की विशेष पुस्तक है, जिससे सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। इस अवसर पर सुमन माहेश्वरी के जीवन से जुड़े प्रसंगों पर कई प्रस्तुतियाँ भी दी गईं। पुस्तक राजसूर्य प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

रिपोर्ट : अनीता वर्मा

भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) में 'नाट्ययोन्मेष', 'पारमिता' एवं 'माटी के लड्डू' पुस्तकों का लोकार्पण

27 जून, 2026 को आईसेक्ट पब्लिकेशन, वनमाली सृजन पीठ एवं स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) के संयुक्त तत्त्वावधान में शारदा सभागार, स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तक लोकार्पण एवं चर्चा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. साधना शुक्ला का काव्य-संग्रह 'पारमिता', एकांकी-संग्रह 'नाट्योन्मेष' तथा सुश्री सुधा दुबे की बाल साहित्य पर केन्द्रित पुस्तक 'माटी के लड्डू' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। उल्लेखनीय है कि इन तीनों पुस्तकों का प्रकाशन आकर्षक कलेवर के साथ आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा किया गया है।
लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेश सक्सेना, सचिव-निदेशक, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र, भोपाल उपस्थित रहे। आत्मीय सान्निध्य श्री मुकेश वर्मा, वरिष्ठ कथाकार एवं अध्यक्ष, वनमाली सृजन पीठ, भोपाल, श्री बलराम गुमास्ता, वरिष्ठ कवि एवं डॉ. साधना गंगराड़े, अध्यक्ष, हिंदी लेखिका संघ, मध्य प्रदेश भोपाल का प्राप्त हुआ।
डॉ. महेश सक्सेना ने कहा कि बाल साहित्य हमारी आने वाली पीढ़ी को सँवारने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।
लोकार्पण समारोह में बड़ी संख्या में वरिष्ठ साहित्यकारों, लेखकों, शोधार्थियों, शिक्षाविदों एवं साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति रही। आभार प्रदर्शन युवा कवयित्री डॉ. मौसमी परिहार द्वारा किया गया।

साभार : आईसेक्ट पब्लिकेशन

कतर में एक 'पुस्तकालय' का शंखनाद

इंडियन कल्चरल सेंटर परिसर, कतर में एक 'पुस्तकालय' का शंखनाद हो चुका है। 8 जून की शाम इस पुस्तक-तीर्थ का भव्य उद्घाटन कतर में भारत के माननीय राजदूत महामहिम श्री विपुल की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। समारोह में कतर नेशनल लाइब्रेरी की कार्यकारी निदेशिका सुश्री तान हुइस्म ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दी, जो भारत और कतर के बीच एक अटूट सांस्कृतिक पुल को दर्शाता है।

आभार : डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे

सम्मान एवं पुरस्कार

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा पुरस्कार-वितरण, सम्मान एवं लोकार्पण समारोह

18 जून, 2026 को महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा 'वसंत' एवं 'रिमझिम' साहित्यिक प्रतियोगिता के पुरस्कार-वितरण, महात्मा गांधी संस्थान आप्रवासी हिंदी साहित्य सृजन सम्मान एवं डॉ. कमल किशोर गोयनका - 'वसंत' विशेषांक के लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में प्राथमिक, माध्यमिक एवं तृतीयक स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'रिमझिम' एवं 'वसंत' हिंदी साहित्यिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साथ-ही-साथ 'महात्मा गांधी संस्थान आप्रवासी हिंदी साहित्य सृजन सम्मान' (छठा संस्करण) भी प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान वर्ष 2015 में भोपाल में

आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अंतर्गत स्थापित किया गया था। द्विवार्षिक आधार पर प्रदान किया जाने वाला यह सम्मान प्रवासी देशों में हिंदी के उत्कृष्ट सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित एवं सम्मानित करने के उदेश्य से समर्पित है। इस वर्ष पहली बार यह सम्मान एक मॉरीशसीय लेखक को दिया गया। डॉ. सोमदत्त काशीनाथ को उनके कहानी-संग्रह 'मुझे लहरों से बातें करनी है' के लिए यह सम्मान दिया गया।

इस अवसर पर हिंदी साहित्य के प्रख्यात विद्वान डॉ. कमल किशोर गोयनका को समर्पित 'वसंत' पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण भी हुआ। यह विशेषांक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान तथा अविस्मरणीय साहित्यिक विरासत को श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित है, जिसमें भारत और मॉरीशस के कई रचनाकारों ने उनकी स्मृति में अपने संस्मरण साझा किए।

भारतीय उच्चायोग मॉरीशस के प्रथम सचिव तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री रंजन कुमार सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। डॉ. विद्योत्मा कुंजल, निदेशिका, महात्मा गांधी संस्थान ने स्वागत-भाषण प्रस्तुत किया। श्री हरि किसुन बुलक, अध्यक्ष, महात्मा गांधी संस्थान एवं रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान तथा श्री मनेश्वर पीतम्बर, महानिदेशक, महात्मा गांधी संस्थान एवं रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान ने भी अपना संदेश सुनाया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों, शिक्षकों, प्रतिभागियों, पुरस्कार विजेताओं एवं सहयोगियों की उपस्थिति, सहयोग और उत्साहवर्धन से यह आयोजन अत्यंत सफल, गरिमामय एवं स्मरणीय बना। समारोह का संचालन सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा और 'वसंत' एवं 'रिमझिम' पत्रिकाओं की प्रधान संपादक, डॉ. अंजलि चिंतामणि ने किया।

साभार : नेशनल एक्सप्रेस

हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 'हिंदी सेवा सम्मान समारोह'

1 जून, 2026 को मुंबई (महाराष्ट्र, भारत) में हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष (1826-2026) के उपलक्ष्य में, प्रभादेवी स्थित रवींद्र नाट्य मंदिर में मुम्बई हिंदी पत्रकार संघ द्वारा 'हिंदी सेवा सम्मान समारोह' भव्य रूप से आयोजित किया गया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय श्री देवेंद्र फडणवीस और उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री माननीय श्री ब्रजेश पाठक सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया।

मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि देश की सम्पूर्ण प्रगति के लिए मातृभाषा में शिक्षा होना, प्रत्येक भारतीय भाषा का विकास और आदर्श के मार्ग पर चलनेवाली पत्रकारिता बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भाषाई विवाद में पड़े बिना प्रत्येक भारतीय भाषा का सहारा लेकर हमें जानकारी और मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री माननीय श्री ब्रजेश पाठक, कौशल विकास मंत्री, माननीय श्री मंगलप्रभात लोढ़ा, विधायक अमित साटम, विधायक मुरजी पटेल, विधायक संजय उपाध्याय तथा राजहंस सिंह एवं आचार्य पवन त्रिपाठी सहित विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के समृद्ध इतिहास ने जन-जन तक स्वतंत्रता संग्राम का अलख जगाने और पहुँचाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई और इसे कोई कभी भूल नहीं सकता। 'उदन्त मार्तण्ड' जैसे पहले हिंदी समाचार-पत्र से शुरू हुए अभियान ने देश के सामाजिक और राष्ट्रीय विचार प्रवाह को दिशा देकर आज़ादी दिलाने में अहम भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल और सोशल मीडिया के विस्तार के कारण सूचना प्रसार का रूप पूरी तरह से बदल गया है, लेकिन यहीं पर ध्यान रखना ज़रूरी है कि खबर की तेज़ी में कहीं उसकी सत्यता व विश्वसनीयता न डूब जाए। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री माननीय श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और भाषा लोगों को जोड़ने का कार्य करती है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस के हाथों हिंदी पत्रकारिता में योगदान देने वाले वरिष्ठ पत्रकारों कुमुद संघवी चावरे, अवधेश व्यास, गंगाधर ढोबले, हेमंत तिवारी और फ़िल्म अभिनेता विनीत कुमार सिंह को सम्मानित किया गया। इसके अलावा प्रो. राममोहन पाठक तथा गायक श्री सुरेश शुक्ला को भी विशेष सम्मान दिया गया। मुंबई हिंदी पत्रकार संघ के महासचिव श्री विजय सिंह कौशिक ने प्रस्तावना में संघ के कार्यों की जानकारी दी। संघ के अध्यक्ष श्री आदित्य दुबे के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राजकुमार सिंह, श्री सुरेंद्र मिश्र, श्री हरिगोविंद विश्वकर्मा, श्री सैयद सलमान, श्री अखिलेश तिवारी, श्री अखिलेश मिश्रा व श्री अशोक शुक्ल ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

साभार : आज का आनंद

भोपाल (मध्यप्रदेश, भारत) में कर्मवीर सम्मान-2026

19 जून, 2026 को माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल (मध्यप्रदेश,

भारत) द्वारा 43वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में वरिष्ठ कवि-कथाकार, विश्व रंग के निदेशक एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, श्री संतोष चौबे को प्रतिष्ठित 'कर्मवीर सम्मान-2026' से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान समारोह तुलसी मानस प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष, श्री रघुनंदन शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के टैगोर अंतर्राष्ट्रीय हिंदी केंद्र के निदेशक तथा वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के अध्येता, डॉ. जवाहर कर्नावट को भी 'कर्मवीर सम्मान' प्रदान किया गया। साथ ही, इतिहास एवं पुरातत्व के अध्येता डॉ. सुभाष अत्रे, संस्कृति मर्मज्ञ श्री श्रीराम तिवारी तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री नुरूल हसन 'नूर' भी सम्मानित हुए।

इस अवसर पर मध्यप्रदेश अभिलेखागार के पूर्व संचालक, श्री शंभुदयाल गुरु द्वारा प्रदत्त साहित्य से इतिहास प्रभाग का शुभारंभ भी अतिथियों द्वारा किया गया।

विश्व रंग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की महत्त्वपूर्ण पुस्तक विश्व के 70 देशों में हिंदी की स्थिति का आकलन 'विश्व में हिंदी' अतिथियों को भेंट की गई।

आभार : श्री संजय सिंह राठौर, सचिव, विश्व रंग फ़ाउंडेशन

श्रद्धांजलि

श्री श्याम त्रिपाठी

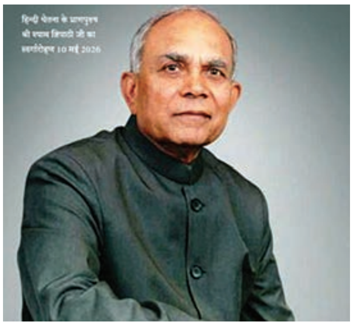

10 मई, 2026 को हिंदी प्रचारिणी सभा, कनाडा की अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' के संरक्षक एवं मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी का निधन हो गया। श्री श्याम त्रिपाठी ने वर्षों तक अथक परिश्रम और लगन से 'हिंदी चेतना' को देश-विदेश में अपने पाठकों तक पहुँचाया है। 'हिंदी चेतना' विदेश की एक प्रतिष्ठित पत्रिका रही, जो 28वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। यह विदेश से निरन्तर प्रकाशित होने वाली सबसे अग्रणी त्रैमासिक पत्रिका है, जिसके अब तक 110 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। विविध सामग्री से संयोजित हिंदी की इस अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ने विश्वभर के लेखकों और पाठकों को परस्पर जुड़ने में विशेष योगदान दिया है। श्री श्याम त्रिपाठी कनाडा की विभिन्न संस्थाओं के सक्रिय सदस्य और मार्गदर्शक रहे हैं। उनके द्वारा लिखे सम्पादकीय पठनीय भी होते थे और संग्रहणीय भी। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे कभी-कभी अपने लेखकों को पत्र लिखकर उनसे सीधा संवाद करते थे और अच्छी रचनाओं की सराहना भी करते थे। एक पत्रकार के साथ-साथ श्री श्याम त्रिपाठी संवेदनशील लेखक भी थे। उनकी आत्मकथा 'सूखे आँसू' उनके संघर्षपूर्ण जीवन में झाँकने का अवसर प्रदान करती है। उन्हें वर्ष 2017 में मॉरीशस के 'विश्व हिंदी सचिवालय' द्वारा हिंदी की सेवा के लिए विशेष सम्मान दिया गया था। उनका देहावसान सम्पूर्ण हिंदी साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

शशि पाधा की रिपोर्ट

प्रो. माजिदा असद

29 मार्च, 2026 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली के हिंदी विभाग की सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर और शिक्षाविद प्रो. माजिदा असद का न्यू जर्सी, अमेरिका में निधन हो गया। वे 1939 में उत्तर प्रदेश के बिजनौर ज़िले के चांदपुर कस्बे में जन्मी थीं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. पूरी की और 1966 में रानी लक्ष्मी बाई कॉलिज में शिक्षण कार्य शुरू किया। अपने लंबे शैक्षणिक करियर के दौरान, उन्होंने दिल्ली हिंदी अकादमी और दिल्ली हिंदी संस्थान में सचिव और सदस्य के रूप में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षण के क्षेत्र में उनका योगदान स्मरणीय रहा है।

साभार : ए.एम.यू. नेटवर्क

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक : **महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव,** भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस एवं कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय

संपादन सहयोग : **सुश्री श्रुति पाठक,** द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस
श्री मनोज कुमार शुक्ला, वरिष्ठ सहायक संपादक, विश्व हिंदी सचिवालय
श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी, सहायक संपादक, विश्व हिंदी सचिवालय

पता : **विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस**
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

संपादकीय

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के युग में हिन्दी

वर्तमान समय में पूरी दुनिया आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (ए आई) के साथ कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है, उन्नत हो रही है और भाषाएं भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं हैं। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आधुनिक युग की वह क्रांतिकारी तकनीक है, जो कम्प्यूटरों तथा मशीनों के लिए मनुष्य की भाषा को समझने, वाक् पहचानने(Speech Recognition), पाठ विश्लेषण करने(Text Analysis) तथा डिजिटल डेटा को सुरक्षित रखने (Digital Archiving) जैसे कार्यों को संभव बनाती है। आज आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस तुरंत अनुवाद तथा गहन भाषाई समझ के माध्यम से विश्व में भाषाई दूरी को कम करने में अहम भूमिका निभा रहा है। भारत सरकार द्वारा विकसित ए आई टूल भाषिणी(BHASHINI) इसका उत्तम उदाहरण है।

विश्व स्तर पर हिंदी के प्रसार में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की बड़ी भूमिका है। जहाँ पहले संचार और तकनीक की सीमाओं के कारण यह भाषा सीमित रह गई थी, वहीं धीरे-धीरे यह सूचना, संचार, प्रौद्योगिकी के साथ आगे बढ़ी और अब आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के कारण और भी उन्नत और समृद्ध हो रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, संचार, प्रशासन तथा मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। आज मशीनी अनुवाद, वाक् पहचान, वर्चुअल सहायक (Virtual Assistants) तथा चैटबॉट जैसी तकनीकों के माध्यम से हिन्दी में संवाद पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सहज और प्रभावी हो गया है। हिन्दी का डेटाबेस लगातार समृद्ध हो रहा है और ऑनलाइन हिन्दी सामग्री की माँग पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ी है। ऑनलाइन हिन्दी सामग्री की लगातार बढ़ती माँग हिन्दी की लोकप्रियता का भी प्रमाण है।

आँकड़ों के अनुसार हिंदी विश्वभर में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। नई पीढ़ी को हिन्दी भाषा से जोड़ने में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एक महत्वपूर्ण शस्त्र बन सकता है। विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से हिन्दी भाषा शिक्षण लगातार विकसित हो रहा है। हिन्दी भाषा अध्ययन अब पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सुलभ और किफ़ायती हो चुका है। साथ ही इस दौर में समय का अभाव झेलते प्रोफ़ेशनल हों, या दूर-दराज़ के इलाके का कोई छात्र, अब हिन्दी अध्ययन-अध्यापन उनकी हथेलियों में सिमट आया है। साथ ही ऑनलाइन अध्ययन ने किसी औपचारिक संस्थान में आने-जाने में होने वाले परिश्रम को भी दूर कर दिया है। हिन्दी के क्षेत्र में अध्ययन, शोध, व्याकरण संबंधी संशोधन, सामग्री निर्माण हेतु सुझाव आदि सुविधाएँ अब सहज ही उपलब्ध हैं।

ज़्यादा पुरानी बात नहीं है। हम सब ने देखा कि कोरोना काल में हिन्दी पठन-पाठन, ऑनलाइन साहित्यिक गतिविधियों में स्पष्ट बढ़त दर्ज हुई थी। यह सिलसिला लगातार जारी है। हिन्दी शिक्षण के नए ऐप लगातार बनाए जा रहे हैं, कंटेंट क्रिएशन से हिन्दी भाषा लगातार विकसित हो रही है। मशीनी अनुवाद में सटीकता बढ़ी है। हिन्दी में निश्चित रूप से नई प्रौद्योगिकी के साथ चलने की क्षमता है। हिन्दी के लिए यह ऐतिहासिक अवसर भी है। हिन्दी को तकनीक सक्षम भाषा के रूप में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है, तभी यह विशाल हिन्दी प्रेमी जनमानस की आवाज़ बन सकेगी। भाषा का भविष्य केवल उसके बोलने वालों की संख्या पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि समय के साथ नए ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और नई पीढ़ी के साथ वह कितनी मज़बूती से जुड़ पाती है। सुखद बात यह है कि हिन्दी के पास बोलने वालों की संख्या, साहित्य और संस्कृति के साथ-साथ नई तकनीक के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की अद्भुत विशेषता है। वर्तमान समय में हिन्दी देशों की सीमाओं को लांघकर लगातार नई ऊँचाइयों को छू रही है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी तकनीक से और गहराई से जुड़े और तकनीक को पूरी तरह अपना ले। तभी आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस हिन्दी को केवल एक वैज्ञानिक भाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि उसकी संपूर्ण सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक चेतना के साथ समझने में सक्षम हो पाएगा।

महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव
भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस एवं कार्यवाहक महासचिव,
विश्व हिंदी सचिवालय